

① स्वल्पक्रिया डारि :- ये डारियाँ बहुत ही सरल भाँकार की होती हैं। तथा इनका अभिकल्पन भी बहुत आसान होता है। ये रैम के एक चक्र में आमतौर पर सम्पूर्ण कार्य कर लेती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं।

① कर्तन डारि (cutting dies)

② कर्षण डारि (forming dies)

① कर्तन डारि :- ये डारियाँ कार्यखण्ड पर कर्तनक्रिया करने के लिए होती हैं। जैसे - ① बल्लिका ② गैट पंचिंग ③ कर्तन डारि आदि।

② कर्षण डारि :- जब प्रेस द्वारा किया गया कार्य उस प्रकार का है जिसमें कि कार्यखण्ड की आकृति में केवल परिवर्तन होता है तब इसमें प्रयुक्त डारि को कर्षण डारि कहा जाता है। जैसे - बंकन डारि, प्रस्रवण डारि आदि।

③ बहु-क्रिया वाली डारि (multi-operation die) :- बहु क्रियाकारी डारि वहाँ प्रयोग की जाती हैं, जहाँ कि एक कर्तन या एक कर्षण क्रिया के अतिरिक्त भी अन्य कोई क्रिया भी रैम के एक स्ट्रोक में की जाती है।

इन डारियों को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जा सकता है।  
(a) श्रींगिक डारि :- इन डारियों का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ एक से अधिक क्रियाएँ रैम के एक स्ट्रोक में ही पूर्ण करनी हों।

(b) प्रगतिशील डारि :- अभी-2 कार्यखण्ड को प्रेस कार्य के लिए एक मशीन से दूसरे मशीन पर हस्तान्तरण करना पाने है।

(c) संयुक्त डारि :- संयुक्त डारियों भी प्रगतिशील डारियों के तरह की होती हैं जिनके द्वारा कर्तन या कर्षण के एक से अधिक क्रियाएँ उन डारियों द्वारा की जाती हैं।